'आतंक' के अंत का समय

दुख के बाद सुख, रात के पश्चात दिन, जन्म के बाद मृत्यु, पाप के पश्चात पुण्य, नर्क के बाद स्वर्ग गम के बाद खुशी में परिवर्तन होना सृष्टि का अटल नियम है। यह शास्वत सत्य है कि किसी भी चीज की अति उसके अंत का कारण बनती है। ऐसे उदाहरणों से शास्त्र तथा इतिहास के पन्ने भरे पड़े है। रावण वीर पराक्रमी जिसका बहत्तर चौकड़ी राज्य, जिसने देवताओं, पांच तत्वों को अधीन करने वाला भी सिर्फ अहंकार की अति उसके अंत का कारण बनी। कंस, जरासंध, कौरवों में खास दुर्योधन के हठ और अहंकार का कारण ही उसके सौ भाईयों सहित पूरे यादव कुल का विनाश हुआ। अंग्रेजों के अत्याचार की अति भी उनको भारत छोड़ने का कारण बनी। सृष्टि चक्र के समयावधि में इस तरह की घटनाओं का समावेश है। आज के समय में आतंक के प्रभाव से सारी सृष्टि दहक रही है। जिसमें सृष्टि का हर मनुष्य इसकी चपेट में है। आतंक के इतने विविध रूप है कि मनुष्य उसके प्रभाव में होते हुए भी उसके समझ से परे है कि यह भी आतंक है।

आतंक का इतना विकराल रुप है कि हर एक मनुष्य, परिवार, समाज देश और पूरा विश्व इसकी आगोश में है। हर एक मनुष्य, देश तथा विश्व के सामने एक गम्भीर चुनौती बनती जा रही है। आज आतंक का अर्थ सिर्फ आतंकवादियों से ही जोड़ दिया गया है। कोई एक जेहादी संगठन विस्फोट करता है, सामूहिक नरसंहार करता है तो उसको आतंकवादी का दर्जा दिया जाता है। राष्ट्र के खिलाफ, सरकार के विपरित कर्म करता है तो वह देश का आतंकी समझा जाता है। परन्तु आतंकवादी की परिभाषा यही समाप्त नहीं होती है। वास्तव में आतंक पैदा करने वाले शत्रु आज सबके अन्दर छिपे बैठे है जिससे आये दिन पूरे देश, गॉव और हर एक घर में ऐसी घटनाओं को अंजाम देते है। परन्तु उनको सिर्फ उसको एक छोटी सी भूल अथवा एक गलती समझकर स्वीकार कर लिया जाता है। बड़े आतंकवादियों के खिलाफ पूरे विश्व स्तर पर समाप्त करने की मुहिम तो छेड़ी जाती है। परन्तु प्रतिदिन हर वक्त होने वाली आतंक के लिए प्रेरित करने वाले आतंकवादियों के खिलाफ किसी का ध्यान नहीं जाता है।

वास्तव में रावण आतंकी नहीं था वह जाति का ब्राह्मण था परन्तु उसके अंदर व्याप्त 'अहंकार' आतंकी ने उसको बुरे कर्मों के लिए प्रेरित किया और वह उसके प्रभाव को अपना अधिकार समझ लिया जिससे उसका अंत हुआ। इसी प्रकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईष्या, द्वेष आदि ऐसे आतंकी है जो सर्व मनुष्यों के अन्दर सुषुप्त अवस्था में होते है। और समय पाते ही अपना मौका नहीं चुकते है। इसलिए आये दिन लालच के वश घूसखोरी, चोरी, रिश्वत, फिरौती के लिए अपहरण तथा क्रोध के वश हत्या, मारपीट, विस्फोट, अहंकार के वश, जाति, पाति का भेद, निन्दा, मान-अपमान, फैशनपरस्ती, बड़ा बनने की चाहत, सम्मान पाने की ललक। इसी तरह 'काम वासना' के वशीभूत होकर बलात्कार, अपहरण तथा मोह के वश तेरा, मेरा, झूठ, अपवाद, आदि की ज्वलंत समस्यायें प्रतिदिन तेजी से बढ़ रही है। इस माया के विलाशिता का हवाई संसार इतना बड़ा है कि इसकी उड़ान में मनुष्य ने सारी हदें पार कर दी है। जो घटनायें कल तक असंभव समझी जाती थी वह आज सब कुछ हो रहा है। रामायण और महाभारत और वेद, पुराण तथा शास्त्रों में जो धर्म ग्लानि की बात कही गयी है। वह तो इसके आगे कुछ भी नहीं है। आज ऐसी दर्द विदारक घटनायें घटित हो रही है जिसकी कल्पना करना भी कठिन है। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी मनुष्य उसको

एक मात्र छोटी सी गलती समझ भूल जाता है। कल तक भाई, बहन, माता, पिता का पवित्र समझा जाने वाला रिश्ता भी कलंकित हुआ है। इससे बड़ा आतंक और क्या हो सकता है। जो धर्म और शौर्य के पन्नों को ही पलट कर रख दिया है। यदि कलियुग को 'आतंक का युग' कहे तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी।

आज जो भी बड़े आतंवादी के रूप में गिने जाते है वह भी तो एक हमारे और आप जैसे मनुष्य ही है। उनके अंदर बदले की भावना, अहंकार, क्रोध, लोभ की भावना ही तो ऐसे कर्म करने के लिए प्रेरित कर रही है। जिसके वशीभूत होकर बड़े-बड़े घटनाओं को अंजाम देते है। इन अदृष्य शत्रुओं से मुक्ति तथा इनको समाप्त करने की जब तक क्रान्ति अथवा मुहिम नहीं की जायेगी तब तक विश्व को आतंक से मुक्त कराना सम्भव नहीं है। आज मनुष्य ने अपने विनाश की तैयारी भी कर ली है। जितने परमाणु बम, हाईड्रोजन बम विश्व में बने है, जिसमें एक बम की क्षमता भी पूरे विश्व को समाप्त करने की क्षमता रखती है। यदि सारे बम विस्फोट हो जाये तो सृष्टि का अता-पता भी नहीं रहेगा। यह कभी भी हो सकता है क्योंकि जिस दिन उसको संरक्षित करने वाला व्यक्ति यदि इन भूतों के वशीभूत हुआ तो इस जगत का सर्वनाश हो जायेगा।

यह सर्व विदित है कि जब-जब इस सृष्टि पर घोर धर्म ग्लानि का समय हुआ तब परमात्मा ने आकर माया से मुक्ति दिलाकर अधर्म का नाश कर सत्धर्म की स्थापना करते है। अनेक भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों तथा दुरांदेशियों ने नये इस युग के अंत और नये युग की आगमन की भविष्यवााणी कर चुके है। ऐसा संकेत मिलने प्रारम्भ हो गये है। क्योंकि परमात्मा शिव अवतरण होकर अपना गुप्त रूप में कार्य करा रहे है। तथा नयी दुनियां का स्थापना का कार्य चल रहा है। यदि हमें हर एक मनुष्य, देश तथा विश्व को शान्तिमय बनाना है आध्यात्मिक क्रान्ति का विगुल बजाकर इन शत्रुओं से मुक्ति दिलानी होगी।

यह सारे चिन्ह जो प्रकट हो रहे, चाहे प्राकृतिक दूष्टिकोण हो, चाहे धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक सबकी अति यह सब कलियुग अथवा आतंक के अंत के प्रभावी उदहारण है। इसलिए समय में रहते हम अपने अन्दर दैवी गुणों की धारणा नहीं किये अथवा परिवर्तन नहीं किये तो समय परिवर्तन की बेला में तो समय तो परिवर्तन करेगा ही परन्तु दर्दनाक होगा। इसलिए समय रहते हम अपने परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रारम्भ कर दे तभी प्रत्येक मनुष्य तथा पूरे विश्व से आतंक का अंत होगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com